शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी 2014

बुद्धचरित में आचार विमर्श

डॉ.एस.एस.गौतम
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (संस्कृत)
शास.स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय दतिया (म.प्र.), भारत

डॉ.रामहेत गौतम
सहायक प्राध्यापक (संस्कृत),
डॉ..हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर म.प्र., भारत

शोध संक्षेप

बुद्धानुरागादनुगम्य तस्य, शास्त्रं च लोकस्य हिताय शान्त्यै।
काव्यं कृतं ज्ञापयितुं निजस्य, कलां न काव्यस्य च कोविदत्वम्1

बुद्ध के प्रति अनुराग से उनके उपदेशों का अनुगमन कर लोकहित और शान्ति के लिए मैंने यह काव्य लिखा है, न कि अपनी कला प्रदर्शित करने के लिए। लोकहित और शान्ति के लिए बोधिसत्व त्थागत् गौतम बुद्ध के लोकोत्तर चरित्रों एवं उपदेशों का 'बुद्धचरित' नामक महाकाव्य में पद्यबद्ध कर वायु द्वारा चन्दन की सुगन्ध फैलाने की भाँति बुद्ध के यश को समस्त संसार में फैलाने वाले भदन्त महाकवि अश्वघोष संस्कृत महाकाव्यों की अजस्र परम्परा में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे महाकाव्यकार, नाटककार, संगीतकार, प्रगीतकार, संगीतज्ञ, शास्त्रार्थी-विद्वान् और प्रतिष्ठित दार्शनिक थे। वस्तुतः जितने भी बौद्ध कवियों ने संस्कृत भाषा का आश्रय लेकर काव्य रचनाएँ कीं उन सभी बौद्ध कवियों में अश्वघोष अग्रगण्य हैं। महायान सम्प्रदाय को दृढ़ भित्ति पर स्थिर करने वाले आचार्यों में इनका नाम सबसे पहले लिया जाता है।

प्रस्तावना

भदन्त महाकवि अश्वघोष ईशा की प्रथम शताब्दी में राजा कनिष्क (78 ई.) के गुरु और आश्रित कवि थे।2साकेतक3 (अयोध्या) के ब्राह्मण परिवार में अवतरित होकर सम्पूर्ण वैदिक साहित्य, रामायण, महाभारत, राजशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, कामशास्त्र, धर्म एवं दर्शनशास्त्र, नीतिशास्त्र आदि समस्त विद्याओं में पाण्डित्य प्राप्त किया हुआ था।4 वह एक उच्चकोटि के आचार्य, वैयाकरण, कवि, प्रचारक एवं वाग्मी थे। तभी तो वह समस्त विद्वानों को शास्त्रार्थ के लिए खुली ललकार लगाते थे। इनके व्याख्यान इतने मधुर, रोचक तथा आकर्षक होने के साथ-साथ लोक कल्याणकारी होते थे कि जिसके आधार पर इनका नाम पड़ने की कई किंवदन्तिया प्रचलित हो गईं।5 एक शिक्षित ब्राह्मण कुल में जन्मे अश्वघोष ने वैदिक धर्म की शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद भी उन्होंने तत्कालीन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए लोक कल्याण के लिए

तथागत बुद्ध के उपदेशों को ज्यादा उपयुक्त, सरल, सहज आडम्बर रहित जानकर सहर्ष स्वीकार कर लिया होगा। विद्वानों की यह विशेषता भी होती है कि वे सत्य को सहर्ष स्वीकार करते हैं और लोगों को वही मार्ग बताते हैं, जो सहज व सरल होने के साथ-साथ लक्ष्य प्राप्त कराने में पूर्ण समर्थ हो। भदन्त महाकवि अश्वघोष ने ब्राह्मण और बौद्ध परम्पराओं का समन्वयवादी दृष्टिकोण अपनाया। शाक्यमुनि अर्हत तथागत गौतम बुद्ध के विश्व कल्याणकारी उपदेशों के प्रचार में अपनी सारी शक्ति लगा दी। उनके साहित्य के अनुशीलन से मालूम होता है कि जगह-जगह उपदेश देने के साथ-साथ साहित्य का सृजन भी किया। जिसका अनुशीलन कर लोक हितकारी आचार-विचारों को प्रस्तुत किया जा रहा है। कथनी और करनी एक हो:-

स्वस्थ्यैश्चिकित्सितव्या हि व्याधिग्रस्ताः सुसाधनैः। साधुमार्गे नियोक्तव्या मूढ़ाः सुपथगामिभिः6

अर्थात् स्वयं स्वस्थ रहते हुए सुन्दर साधनों के द्वारा व्याधि से पीड़ित प्राणियों की चिकित्सा करनी चाहिए। स्वयं सुमार्ग पर चलते हुए, कुमार्गगामी मूढों को सुमार्ग पर लगाना चाहिए। इससे ज्ञात होता है कि महाकवि ने इस बात पर विशेष जोर दिया है कि हम जैसे दिखना चाहते हैं वैसे ही हो जायें, अपनी कथनी और करनी को एक बनाकर हैं तो हम दोहरे जीवन जीवन जीने के द्वन्द्व से बच सकते हैं। और असत्य का सहारा नहीं लेना पड़ेगा।

सदाचरण

महाकवि अश्वघोष ने कहा मानव के लिए 'शील' अमूल्य निधि है, जिसकी सदैव रक्षा करनी चाहिए अर्थात् अपने शील को कभी भंग नहीं होने देना चाहिए। शील है तो शान्ति और यश की प्राप्ति होगी। मानव के समस्त गुणों का आश्रय शील ही है।

निखिलानां गुणानां च तथा शीलं शुभाश्रयः।7

शील और आचरण शुद्ध होने से मनुष्य पाप-रहित होकर अनामय पद को प्राप्त करता है।

शीलंचाचरणं शुद्धं क्रियतां यत्नतो बुध।
शीलादधविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् 8

आदर भाव

'पूज्येऽपूज्यपदे प्रोक्ते प्रोक्तुः पापं प्रजायते।'9

'यो गृह्णाति गुरोनमि तस्य धर्मो विनश्यति।

यथा

पित्रोस्तिरस्कारात् संतत्या धर्मसंक्षयः10

अर्थात् पूज्य (सम्मानीय) प्राणी में अपूज्य (अपमान/अनादर सूचक) पद (शब्द) का प्रयोग करने से वक्ता को पाप लगता है। जो गुरु को नाम लेकर पुकारता है, उसका धर्म नष्ट हो जाता है, जैसे माता पिता का तिरस्कार करने से सन्तान का धर्म क्षय होता है।

समतावादी विचार

महाकवि का मानना है कि कोई भी व्यक्ति धर्म, जाति अथवा अवस्था से श्रेष्ठ नहीं हो जाता। श्रेष्ठता तो विद्वत्ता से आती है और विद्वत्तता किसी धर्म, जाति की मोहताज नहीं होती।

तस्मात् प्रमाणं न वयो न वंशः कश्चित् क्वाचिच्छ्रैष्ठयमुपैति लोके।11

शिक्षा सम्बन्धी आचार-विचार

सच्चा ज्ञानी वही है जो ज्ञान का अर्जन दूसरों को दुःख देने के लिए नहीं, बल्कि दूसरों के भले के लिए करता है।

नाध्यैष्ट दुःखाय परस्य विद्यां ज्ञानं शिवं यत्तु तदध्यगीष्ट।

स्वाभ्यः प्रजाभ्यो हि यथा तथैव सर्वप्रजाभ्यः शिवमाशशंसे12

लोक कल्याण के लिए सुपात्रों को सदैव विद्या दान करना चाहिए, क्योंकि विद्या दान ही सर्वश्रेष्ठ दान है। इस बात को महाकवि ने राजा सुदत्त के मुख से कहलवाया है

लब्ध्वा सर्वोत्तमं दानं ज्ञात्वेत्थं सौगतं मतम्।13

ज्ञान जहाँ से भी प्राप्त हो सीखना चाहिए, फिर चाहे ज्ञानी उम्र में छोटा भी क्यों न हो, जिस प्रकार कि महाराज शुद्धोधन ने स्वयं अपने पुत्र से ज्ञान प्राप्त किया। एवं प्रमोदयन् भूपं दर्शयित्वा स्ववैभवम्।

अन्यो रविरिवाकाशे तिष्ठन् धर्मं दिदेश सः14

जिससे हमने ज्ञान प्राप्त किया है वह हमारा गुरु है, भले ही वह उम्र में हमसे छोटा या बराबरी का क्यों न हो। गुरु का सदा सम्मान करना चाहिए। हमें कभी भी गुरु को उनके नाम से नहीं पुकारना चाहिए, क्योंकि सम्मानीय व्यक्ति के प्रति अपमान सूचक शब्द प्रयोग करने से पाप लगता है।

पूज्येऽपूज्यपदे प्रोक्ते प्रोक्तुः पापं प्रजायते।15

यो गृह्णाति गुरोर्नाम तस्य धर्मो विनश्यति।

यथा पित्रोस्तिरस्कारात् संतत्या धर्मसंक्षयः16

मैत्री-भाव सम्बन्धी आचार-विचार

महाकवि अश्वघोष का विचार है कि यदि हम हमारे घर आने पर अपने शत्रु को सत्कार के साथ आगे बढ़कर लेंगे तो निश्चय ही शत्रुता कम या खत्म हो जाएगी। अतिथि सत्कार करना परम धर्म है अतिथि चाहे जैसा हो।

आतिथ्यमार्यधर्मो हि स्यादतिथिर्यथा तथा।17

महाकवि अश्वघोष के मत में हिंसा को अहिंसा से ही खत्म किया जा सकता है। धर्म एवं क्षेत्र के आधार पर भड़कने वाली हिंसा, आतंकवाद को कम करने का कारगर उपाय सुझाते हुए महाकवि लिखते हैं कि कलह करने से न तो सुख प्राप्त हो सकता है और न ही धर्म। न सुखं न च वे धर्मो जायते कलहात् क्वचित्।18

कर्त्तव्य के प्रति समर्पण भाव

आज का युवा कम परिश्रम में ही पूर्ण सफलता की उम्मीद करता है और असफल होने पर शीघ्र निराश हो जाता है, ऐसे युवा वर्ग को राह दिखाते हुए महाकवि ने कहा है कि आप जो भी कार्य करें उसे उत्साहपूर्वक एवं प्रसन्न मन से करें, जिससे वह कार्य भी सफल हो जाएगा और वह काम उबाऊ भी नहीं लगेगा, क्योंकि बिना मन के किया जाने वाला कार्य थकान ज्यादा देता है। जैसे कि वन-गमन के समय स्वामी राजकुमार सिद्धार्थ की आज्ञा से उनका घोड़ा उत्साहपूर्वक जाते समय जिस मार्ग को एक रात्रि में तय कर लेता है, उसी मार्ग को लौटते समय आठ दिन में तय कर सका।

यमेकरात्रेण तु भर्तुराज्ञया जगाम मार्गं सह तेन वाजिना।

इयाय भर्तुर्विरहं विचिन्तयंस्तमेव पन्थानमहोभिरष्टभिः19

भदन्त महाकवि अश्वघोष ने जो भी कार्य आरम्भ किया लाख रुकावटें आने पर भी उसे पूर्ण करके ही छोड़ा। बौद्ध धर्म का पूर्ण समर्पण भाव से प्रचार-प्रसार करना इसका एक प्रमुख उदाहरण है और यही प्रेरणा उन्होंने अन्य सभी लोगों को देते हुए लिखा है कि "दुर्लभ कार्य भी विशेष उद्यम से सिद्ध होते हैं। जल के बारम्बार प्रपात से शिला भी पतली पड़ जाती है। साथ ही अरणी मंथन में जो कभी विश्राम नहीं लेता, वही अग्नि प्राप्त करता है। सिद्धि प्राप्ति की भी यही रीति है।"

दुर्लभान्यपि कार्याणि सिद्धयन्ति प्रोद्यमेन वे।
शिलापि तनुतां याति प्रपातेनार्णसो मुहुः20

धर्म सम्बन्धी विचार

अरणीमन्थने जातु यो विरन्तुं न चेष्टते।
स एव लभते वह्निमेवं सिद्धेरपि प्रथा21

धर्म के सम्बन्ध में महाकवि ने कहा है कि सब भूतों में 'दया' ही धर्म है।

सर्वेषु भूतेषु दया हि धर्मः।22

इस धर्म का आचरण वही कर सकता है जो समदर्शी और जितेन्द्रिय है। साधु या पुजारी का वेष धारण करने से कोई व्यक्ति धार्मिक नहीं हो जाएगा।

भूषितो मुण्डितो वापि समदृष्टा जितेन्द्रियः।
धर्ममाचरितुं योग्यो न लि धर्मकारणम्23

आज के इस धोखा-धड़ी के युग में धन का दान करने वाले तो कई मिल जायेंगे पर सत्कर्म धर्म की बात बताने वाले अत्यन्त दुर्लभ हैं। सुलभा धनदातारो धर्मदाता सुदुर्लभः।24

महाकवि ने वर्णित किया है कि अर्हन्त तथागत बुद्ध के मुख से धर्मोपदेश सुनकर समस्त वातावरण धर्ममय हो गया था, कोई भी व्यक्ति धन के लिए धर्म का आचरण नहीं करता था और न ही लोग धर्म के नाम पर लड़ते थे।

कश्चिद्धनार्थं न चचार धर्मं धर्माय कश्चिन्न चकार हिंसाम्।25

भदन्त महाकवि अश्वघोष ने धर्म के लिए किया गया श्रम उत्कृष्ट माना है

"धर्मार्थं खण्डो गुणवान श्रमेभ्यः।
ज्ञानाय कृत्यं परमं क्रियाभ्यः26

अर्थात् धर्म के लिए किया जाने वाला श्रम सभी श्रमों से उत्कृष्ट है तथा ज्ञान के लिए सम्पादित कार्य सभी कार्यों में उत्तम है। भदन्त महाकवि अश्वघोष बौद्ध धर्म के प्रचारक होने के साथ-साथ परधर्म सहिष्णु भी थे। एक ओर यदि उन्होंने अपने मौलिक विचारों को अभिव्यक्त किया है तो दूसरी ओर वैदिक धर्म के प्रति आदर भाव रखा है। वैदिक तथा ब्राह्मण धर्म के प्रति उनका हृदय आस्तिक है, यह बात बुद्धचरित महाकाव्य में जगह-जगह वैदिक तथा वैदिक धर्म कथाओं से लिए गए उदाहरणों से स्वतः सिद्ध हो जाती है। महाकाव्यों में कपिल मुनि को उन्होंने धार्मिकों में वरेण्य बतलाया है तथा शुद्धोधन के वेद स्वाध्याय और यज्ञ विहित कार्यों का आदर से उल्लेख किया है "तेनापायि यथाकल्पं सोमश्च यश एव च। वेदश्चाम्नापि सततं वेदोक्तो धर्म एव च"27 नन्द के धर्म प्रचार में भदन्त की यह युक्ति उनकी परधर्म सहिष्णुता का प्रतीक है

"निर्मोक्षाय चकार तत्र च कथां काले जनायार्थिने।
नैवोन्मार्गगतान् परान् परिभवन्नात्मानमुत्कर्षयन्"28

इस प्रकार हम पाते हैं कि भदन्त महाकवि अश्वघोष ने दूसरे धर्मों की आलोचना किए बिना ही तथागत बुद्ध की लोक कल्याणकारी विचारधारा (धर्म) से अधिक से अधिक लोगों को अवगत कराया है। बुद्ध और उनके उपदिष्ट मार्ग के प्रति भदन्त महाकवि अश्वघोष में अनुपम समर्पण भाव है।

दुःख सम्बन्धी विचार

महाकवि का मत है कि यह समस्त संसार दुःखमय है। समस्त दुःखों का मूल कारण 'विषयों में आसक्ति' है।

भोगानामसमीक्ष्यैव सेवनं दुःखकारणम्। नराणां विषयासक्तिनिदानं विपदां ध्रुवम्29

अष्टांग मार्ग के सम्यगानुशीलन से इस दुख से नितांत मुक्ति संभव है।

मोक्ष सम्बन्धी विचार

बौद्ध दर्शन में मोक्ष को 'निर्वाण' शब्द से अभिहित किया गया है, परन्तु विभिन्न स्थानों पर महाकवि अश्वघोष ने अपने महाकाव्य 'बुद्धचरित' में मोक्ष शब्द का ही प्रयोग किया है। जब मनुष्य जान जाता है कि यह समस्त संसार अनित्य व नश्वर है तो वह समस्त सांसारिक विषय भोगों से अनासक्त होकर राग-द्वेष रहित हो जाता है। निज और पराये में समान बुद्धि हो जाती है, समस्त क्लेषों से मुक्त हो जाता है और उसे कभी समाप्त न होने वाले परम सुख की अनभूति होती है। परम आनन्द और परम सुख की अवस्था ही निर्वाण है। आत्मानन्दः परानन्दो निर्वाणं परमं सुखम्।30

मोक्ष प्राप्ति के लिए प्राणी को यह आवश्यक नहीं कि वह चतुर्थ आश्रम (सन्यास आश्रम 75-100 वर्ष) की अवस्था का इन्तजार करता रहे और उससे पूर्व मृत्यु हो जाए तो वह निर्वाण से वंचित रह जाएगा। अतः निर्वाण प्राप्ति का कोई निश्चित काल (अवस्था) नहीं है।

निवोह के श्रेयसि नास्ति कालः।31

'मोक्षस्य समयापेक्षा नास्ति सौगत्यमाप्नुहि।32

ज्ञान समस्त क्लेशों से मुक्ति का मार्ग:

महाकवि अश्वघोष ने अपने महकाव्यों में लोक कल्याण के लिए सर्वत्र ज्ञान प्रतिष्ठा की है। उदाहरण के लिए यथा च मन्त्रतन्त्राभ्यां फणी गेहान्निरस्यते।

तथा ज्ञानेन निर्वास्य दोषान् स्वपिहि नान्यथा33

जिस तरह तंत्र-मंत्र के द्वारा काला सर्प घर से निकाल दिया जाता है, उसी तरह ज्ञान के द्वारा दोषों को निकाल कर (तुम लोग सो जाओ अर्थात् निश्चित हो जाओ) बिना दोष निकाले नहीं सोना (निश्चिन्त्य होना) चाहिए।

न जज्वाल चिता सा हि मन्त्रेणावेष्टिता इव।34

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यही कहा जा सकता है कि संस्कृत साहित्य के कवियों में भदन्त महाकवि अश्वघोष का अपना विशिष्ट स्थान है। उनके द्वारा तथागत गौतम बुद्ध के उपदेषों को लेखनीबद्ध कर लोगों के लिए कल्याण का मार्ग प्रसस्त किया गया है। अपने कर्म और वचन को एक करके मिथ्या भाषण से बचा जा सकता है। शील मानव की अमूल्य निधि है। शील और शुद्ध आचरण निर्वाण प्राप्ति में सहायक होते हैं। माता-पिता, गुरु, आदि ज्येष्ठजनों व विद्वानों का सम्मान करना सदा पुण्य व यश को बढाने वाला होता है। जन्म तथा कुल के आधार पर कोई भी पूज्य नहीं हो जाता। श्रेष्ठता तो ज्ञान से आती है। अर्जित ज्ञान का उपयोग दीन सेवा के लिए हो किसी को हिंसित करने के लिए नहीं। दान सुपात्रों को ही दिया जाना उचित है। सभी के साथ समान का व्यवहार शत्रुता को कम करता है। कर्तव्य के प्रति समर्पण भाव कार्य को आसान बना देता है। सभी के प्रति दया व सेवा का भाव ही सच्चा धर्म है । आडम्बर से दूर रहते हुए धर्म के लिए किया गया कार्य सर्वोत्तम है । अन्य धर्म की आलोचना से दूर रहते हुए मानव मात्र का हित चिंतन ही सच्चा धर्म है। संसार के समस्त दुखें का कारण तृष्णा है जिसे त्यागने पर मुक्ति का मार्ग प्रसस्त होता है। निर्वाण प्रप्ति ही मानव का चरम लक्ष्य है।

सन्दर्भ

1.बुद्धचरित 28/78

2.संस्कृत साहित्य का इतिहासः-कमलनाथ शास्त्री

3.सौन्दरनन्द पुष्पिका

4.बुद्धचरित 1/40-45

5.संस्कृत सुकवि समीक्षा-आचार्य बलदेव उपाध्याय

6.बुद्धचरित 15/14

7.बुद्धचरित 23/18
8.बुद्धचरित 18/06
9.बुद्धचरित 25/26
10.बुद्धचरित 29/125
11.बुद्धचरित, 01/46
12.बुद्धचरित, 02/55
13.बुद्धचरित, 18/54
14.बुद्धचरित, 19/16
15.बुद्धचरित,15/26
16.बुद्धचरित, 15/29
17.बुद्धचरित, 15/22
18.बुद्धचरित, 28/45
19.बुद्धचरित, 8/2
20.बुद्धचरित, 26/63
21.बुद्धचरित,26/64
22.बुद्धचरित, 9/17
23.बुद्धचरित,16/10
24.बुद्धचरित, 28/50
25.बुद्धचरित, 2/14
26.सौन्दरनन्द 2/25
27.सौन्दरनन्द, 2/44
28.सौन्दरनन्द, 18/62
29.बुद्धचरित, 22/33
30.बुद्धचरित, 19/27
31.बुद्धचरित, 09/38
32.बुद्धचरित, 16/05
33.बुद्धचरित, 26/47
34.बुद्धचरित, 27/72